

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

The Girl with the Golden Parasol

(Excerpts from a Novel)

Jason Grunebaum

I

That was the bare back of Madhuri Dixit, the very one Salman Khan had aimed at and hit with the pebble from his slingshot. Undulating from the waist, she froze at the sting in her back and turned around to look. Her gaze held no pain—rather, a flirtatious excitement, inviting him toward her. Those eyes didn't belong to Madhuri Dixit, but to a startled doe—an intoxicated, mad, silly, doe who lovingly served herself up to her hunter.

Rahul had taped the photo—it was center spread in that month's *Stardust*—over the window in his room. The blazing sun made the afternoons on the second floor in Room 252 hard to take. Madhuri Dixit's wounded, bare back repelled the intense afternoon sun from his hostel room. She turned her neck and stared continuously at Rahul with those silly, drunken eyes, as if it had been Rahul who'd made a target of her beautiful, wounded back.

Aside from Rahul, no one knew that during a private moment of utter secrecy, he had Salman Khan quietly kicked out of Room 252 and took the movie star's place. Rahul shivered with excitement as he realized that the man who had wounded Madhuri Dixit's gorgeous, voluptuous back was none other than he himself. It was his slingshot that launched the pebble with a crack that whizzed into Madhuri Dixit, who then let loose an "Oooooooh!"—just as the image in *Stardust* had been snapped.

Girls enjoy being roughed up. They aren't kitty cats or other small, furry animals that purr and roll around when you pet them sweetly. A girl is a different kind of creature—the rougher it gets, the sharper the slap, the more she likes it.

The truth? Girls love brute strength.

पीली छतरी वाली लड़की

(Excerpts from a Novel)

Uday Prakash

यह मधुरी दीक्षिति की वही नंगी पीठ थी, जिस पर सलमान खान ने गुलेल से नशाना ताक कर बंटी मारी थी। लचकती हुई कमर और पीठ उस चोट अचानक रुक गयी थी और माधुरी दीक्षिति ने गर्दन मोड़कर पीछे देखा था। उसकी नज़र में कोई पीड़ा नहीं थी। एक नशीली, अपनी पीठ की ओर आमंत्रित करती, उत्सुकता थी। वह आँख माधुरी दीक्षिति की नहीं, किसी चौंकी हुई हरिणी की आँख थी। एक ऐसी मूर्ख, मस्त और सनकी हरिणी जो अपने शिकारी के सामने प्यार से खुद अपने आपको परोसा करती है।

राहुल ने 'स्टारडस्ट' के सेंटर स्प्रेड में छपे उस चित्र को फेबिकोल से अपने कमरे की खड़की की कांच पर चपिका दिया था। दरअसल उधर से धूप आती थी और दोपहर दूसरी मंज़िल के उस कमरा नंबर 252 में गर्मी के मारे रहना मुश्किल हो जाता था। अब माधुरी दीक्षिति ने दोपहर की उस तेज़ जलती हुई धूप को हॉस्टल के उस कमरे में आने से रोक दिया था और अपनी खुली, गुलेल की बंटी से चोट खाई पीठ उधर कर दी थी। वह लगातार अपनी मूर्ख, मस्त, सनकी आँखों से राहुल की ओर गर्दन मोड़कर देख रही थी, जैसे गुलेल से उसकी खूबसूरत लचकती हुई खुली कटावदार पीठ को नशाना राहुल ने बनाया हो।

यह राहुल के अलावा और कोई नहीं जानता था कि उसने एक दिन कमरा नंबर 252 के भीतर किसी एक गोपनीय, बेहद नज़ी क़्षण में, किस तरह सलमान खान को चुपचाप बाहर निकाल फेंका था और उसकी जगह खुद आ गया था। यह सोचते ही उस खूबसूरत मांसल पीठ को चोट पहुंचाने वाला वह खुद है। उसी की गुलेल ने सटाक से बंटी मारी और तड़ से बंटी लगते ही माधुरी दीक्षिति ने एक 'उई.. 55' की आवाज़ निकाली और 'स्टारडस्ट' के उस चित्र में 'फ्रीज़' हो गयी।

लड़की चोट खाना बहुत पसंद करती है। वह बलिली या गलिहरी नहीं है, जिसकी पीठ पर प्यार से, धीरे-धीरे अपनी उंगलियाँ या हथेलियाँ फरिओ, उसे संभाल-संभाल कर

That's why Rahul began to go to the university gym, to beef up his biceps like Salman Khan's. A back like a cheetah and a torso like a leopard. He wanted to mold himself into a sleek, savage, fleet-footed wild animal. And then? Dark Ray Bans, a pair of Wranglers or Levis, a t-shirt, and Nike socks to go with a winning pair of Woodland shoes.

He used to wonder why he didn't feel the same way about Lara Datta, Manpreet Brar, or Gul Panag as he did about Madhuri. After all, she was quite a bit older than him. He'd just seen a film with Miss Universe, Aishwarya Rai. She shook her bare back and pranced around just like Madhuri did, and then twisted her neck back and forth while staring at Rahul with her brown eyes. But shit. It didn't work. Aishwarya had nothing on Madhuri. The difference between Madhuri's back and all the others was the difference between the sky and the earth. There was something about that back of Madhuri—the texture, the build, the hue—that Aishwarya and the others couldn't match.

Rahul did a comparative study. The bodies of Gul Panag, Sushmita, Lara, and the rest struck him as awfully artificial. The dieting, the exercise, all that was required to maintain a model's figure had created these plastic bodies. On top of that, the waxing, facials, spas, and who knows what else. They struck Rahul as non-human, synthetic dolls. Even the hair on their heads and their bodies didn't look real—the shadows in their armpits after shaving even looked like artificial coloring. But it wouldn't take much—two weeks max. Feed them like humans, let them live like normal girls do, and they'd fatten up and get baggy bellies. You wouldn't recognize them. But Madhuri was a different species entirely. You could drop her into a slum, let her live in this hostel room, even feed her the institutional fare of daal, rice, and vegetables found in the college mess hall, and she wouldn't change a whit. She'd

सहलाओ तो वह गुर्र-गुर्र करती लोटम लोट होगी। लड़की तो वो चीज़ है, जिसको जतिना मारो, जतिना कूटो, उसे उतना मज़ा मिलता है।

लड़की तो असल में ताकत और हिसा को प्यार करती है।

राहुल ने इसीलिए युनिवर्सिटी के जमि में जाना शुरू किया था, जिससे वह सलमान खान की तरह अपनी भुजाओं में मछलियाँ बना सके। चीते जैसी कमर और तेंदुए जैसा धड़। वह एक चकिने, हसिक, खूबसूरत, फुरतीले बनैले जानवर में खुद को ढाल लेना चाहता था। इसके बाद और क्या चाहिए? एक रेनबेन का काला चश्मा, रेंगलर या लेक्स की एक जींस पैट और एक टी शर्ट, नाईके के साँक्स और वुडलैंड का बढ़िया जूता। वह कई बार सोचता, लारा दत्ता, मनप्रीत ब्रार या गुलपनाग को देखकर वह उस तरह क्यों महसूस नहीं करता, जैसा माधुरी दीक्षिति को देखकर करता है। जब कि माधुरी दीक्षिति उससे उम्र में बहुत बड़ी थी। हाल की एक फ़िल्म में वशिष्ठ सुंदरी ऐश्वर्या राय अपनी पीठ को हू-ब-हू माधुरी दीक्षिति की तरह खोलकर बार-बार लचका रही थी और गर्दन मोड़-मोड़ कर अपनी कंजी-भूरी आँखों से राहुल की ओर देख रही थी। लेकिन शिट। बेकार। वो बात कहाँ जो माधुरी में है। माधुरी की पीठ और दूसरी पीठों में जमीन आसमान का फ़र्क है। एक ऐसी कोई चीज़ माधुरी दीक्षिति की पीठ में है, उसकी त्वचा में या उसकी बनावट में, या उसके रंग में... जो ऐश्वर्या या दूसरों की पीठ में नहीं है।

राहुल तुलनात्मक अध्ययन करता। उसे लगता कि गुलपनाग, सुस्मिता या लारा आदि का शरीर काफ़ी कुछ कृत्रिमता से बनाया गया है। माँडलिंग की ख़ास नाप-जोख के लिए इंची टेप से नाप-नापकर, डायटिंग और एक्सरसाइज़ से तैयार किया गया कृत्रिम शरीर। फरि ऊपर से वैक्सिंग, फ़ेशियल, साओना और क्या-क्या। राहुल को वे गैर-मानवीय सथिटिक गुड़ियाँ लगती। उनके सरि के बाल और शरीर के रोयें भी सथिटिक लगते। यहाँ तक कि उनकी बगलों में शेवगि के बाद का जो हल्का नीला-हरा रंग होता, वह भी उसे कलरिंग लगता। ज़्यादा नहीं, बस पंद्रह दिन इनको ठीक-

keep the same miraculous radiance and the same dazzling beauty.

Madhuri's back was natural and authentic and, astonishingly, a swadeshi one. Made In India. The others were unnatural, foreign imports, and that's why they held no magic, Rahul deduced. But far more momentous was his other conclusion: that girls took pleasure from pain, violence, and strength. And what they enjoyed most was being humiliated, oppressed, and abused. Times had changed. No one paid attention anymore to '60s and '70s film-idol types like Shammi Kapoor, Rishi Kapoor, Vishwajeet, and Jitendra. Today's girls were crazy for the macho, sadistic sort like Salman Khan, Sunny Deol, and Ajay Devgan. How violent and menacing Shah Rukh Khan had been in *Darr*: calling Juhi Chawla on the phone at all hours, stalking her, trying to rape her, somehow smearing her with blood. Juhi was rendered speechless with fright. And yet it was this half-schizophrenic madman, Shah Rukh Khan, that all the girls in school went ga-ga over.

A Shah Rukh, that's what girls wanted, not some kowtowing Krishna-like husband. Rahul solved the mystery, and since then Madhuri Dixit has been living in the window of Room 252. It's been four months.

II

Rahul had taken an unusual career path. First, he'd completed an M.S.C. in organic chemistry. Then suddenly his spirit was stirred toward anthropology. The reasons were a bit fuzzy, but it might have had something to do with encouragement given to Rahul by certain cousin of his, who was an internationally renowned anthropologist and who lately had been appointed as the Director General of the Archaeological Survey of India. He used to come to Rahul's village, sometimes staying at their

ठीक आदमी के तरीके से खाने-पीने दो, आम लड़कियों की तरह रहने दो तो ये फसक कर बोरा हो जाएँगी। पहचानना मुश्किल होगा। जबकि माधुरी दीक्षित की बात ही दूसरी है। चाल में या इस हॉस्टल के कमरे में भी रहने लगेगी, मेस की दाल रोटी सब्जी भी खाएगी, तब भी जस-की-तस ही रहेगी। ऐसी ही कमाल। ऐसी ही मस्त।

माधुरी की पीठ नेचुरल है। प्राकृतिक। यह अजब तरह से एक स्वदेशी पीठ है। बाकी पीठें सथिटिक हैं और बदिशी। इसीलिए उनमें कोई जादू नहीं। राहुल ने नषिकर्ष नकाला। लेकिन उसका दूसरा वह नषिकर्ष ज़्यादा गंभीर था जिसके अनुसार लड़कियाँ दरअसल चोट, पीड़ा-हिसा और ताकत को प्यार करती हैं। वे मूर्ख बनाया जाना, उत्पीड़ित होना और नरिममता के साथ अपने भोग लिये जाने को ज़्यादा पसंद करती हैं। ज़माना बदल गया है। वे छठे-सातवें दशक के शम्मी कपूर, ऋषिकपूर, बशिवजित या जितेंद्र टाइप के मर्द को नहीं, सलमान खान, सन्नी देओल या अजय देवगन जैसे माचो या सैडसिट मर्द के पीछे पागल होती हैं। कतिना खतरनाक और हसिक था 'डर' में शाहरुख खान? फ़ोन कर कर के, पीछा कर के और रेप की कोशिश कर के उसने जुही चावला को लसत-पसत, लहू-लुहान कर डाला था। डर के मारे उसकी घग्घी बंध गयी थी। लेकिन उसी अर्ध्द वकिषपित-शीज़ोफ़्रेनिक शाहरुख खान के पीछे सारी युनविरसिटी की लड़कियाँ दीवानी थीं।

कुड़ियों को शाहरुख चाहिए, कोई छक्का, कृष्ण-कन्हैया टाइप का हज़बैंड छाप गऊ नहीं। राहुल इस रहस्य को समझ चुक था। इसी के बाद से उसके कमरा नंबर 252 की दीवार की खड़की में माधुरी दीक्षित रहने लगी थी। पछिले चार महीनों से।

*

राहुल के कैरियर का नक्शा थोड़ा-सा असामान्य था। उसने आर्गेनिक केमिस्ट्री में एम. एस.सी. किया था। इसके बाद अचानक उसमें एंथ्रोपोलॉजी में एम. ए. करने का

house for a few weeks at a time. Rahul's father was his favorite uncle, and the two of them got on extremely well. Rahul's duty was to look after his cousin, Kinnu Da.

Rahul heard that Kinnu Da's book on adivasis—the tribal people of India—had been published by Penguin and caused a worldwide stir. Before it came out, people only discussed the usual group of Brahmins, landowners, businessmen, Hindus, and Muslims when talking about the fight against the British. Up until then, historians had molded leaders who came from those privileged backgrounds. Almost no adivasis or untouchables showed up in those stories, which were dominated by the likes of Laxmibai, Taty Tope, a raja here, Nana Sahib, a landowner there, Kunwar Singh, Fadanvis, Azimullah, Mangal Pandey, or some nawab. The same kind of leaders were then held up as twentieth-century icons: Nehru, Gandhi, Tilak, Jinnah, Suharwardi, Patel, and the rest, most of whom also came from a high caste and wealthy social class. Once in a blue moon the name of Dr. Ambedkar would pop up. The task of writing the constitution for independent India was entrusted to this man, who came from a caste of untouchables, in recognition of his singular genius. Yet he's been the target of a smear campaign—sometimes accused of being an agent of the English, other times portrayed as someone who wanted to wipe out Hinduism in India and propagate Buddhism instead. In other words, more of the villain than the hero.

The book made such waves because, for the first time, the tale of the struggle of adivasi leaders was told, too. From regions like Singhbhumi and Jharkand, including Chota Nagpur, Kinnu Da's book contained well-documented, heartbreaking stories that had, until then, existed only as living folklore in the undeveloped regions of Bihar, Bengal, and Orissa.

The more Kinnu Da spoke, the more Rahul

भूत जागा। इसका ठीक-ठीक कारण पता लगाना ज़रा मुश्किल है लेकिन संभव है, इसके पीछे राहुल के एक फुफेरे भाई की प्रेरणा रही हो, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर के नृत्यशास्त्री और फ़लिहाल एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया के डायरेक्टर जनरल थे। वे कई बार राहुल के घर, उसके गाँव आते। कभी-कभी तो कई हफ़्ते वे वहीं रुक जाते। पतिता जी उनके सबसे प्रिय मामा थे। दोनों की खूब पटरी बैठती थी। राहुल की ड्यूटी उनकी देखाभाल की होती।

राहुल ने सुना था कि उनकी आदवासियों पर एक ऐसी क़िताब पेंगुइन से आई है, जिसने दुनिया में तहलका मचा रखा है। इस क़िताब के आने के पहले तक सब लोग यही जानते थे कि अंग्रेज़ों के खिलाफ़ लड़ाई सिर्फ़ ब्राह्मणों, ठाकुरों, बनियों या हिंदू-मुसलमानों ने ही लड़ी है। अब तक के इतिहासकारों ने जिन नायकों का निर्माण किया था, एव सब इन्हीं पृष्ठभूमियों के थे। उनमें आदवासी और दलित लगभग नहीं थे। लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहब, कुंवर सिंह, फ़ड़नवीस, अजीमुल्ला, मंगल पांडे, राजा, ज़मींदार, नवाब वगैरह। बाद में बीसवीं सदी में भी ऐसे ही नायक बने, नेहरु, गांधी, तलक, ज़िन्ना, सुहरावर्दी, पटेल आदि। इनमें से अधिकांश ऊँची जाति और अमीर वर्ग के लोग थे। ले-देकर कभी-कभार डॉक्टर अंबेडकर का नाम आता था, जो दलित थे और प्रकांड प्रतापि के कारण उन्हें आज़ाद भारत का संवर्धान बनाने का काम सौंपा गया था, लेकिन उनके बारे में भी यह प्रचार कर दिया गया था कि वे अंग्रेज़ों के एजेंट थे और हिंदू धर्म को ख़त्म कर के बौद्ध धर्म को भारत में स्थापित करना चाहते थे। यानी नायक से ज़्यादा खलनायक थे।

किन्नु दा की क़िताब ने इसीलिए तहलका मचाया कि उसमें पहली बार, बहुत प्रामाणिक दस्तावेज़ों और तथ्यों के साथ, सहिभूमि और झारखंड समेत छोटा नागपुर बेल्ट के उन आदवासी नायकों के संघर्ष की कथा कही गयी थी, जिनका महान त्रासदी भरा नायकत्व अब तक सिर्फ़ बहिरार, उड़ीसा और बंगाल के पछिड़े आदवासी इलाकों में प्रचलित 'फ़ोकलोर' में ही मौजूद था।

felt that organic chemistry was a waste. What would he do with his degree? He'd become a chemist in a brewery or in some food processing plant owned by a multinational. Or he'd get a teaching job in some college or university. He began to envision his future as a fat, whiny man, feasting on pizza like a pig, chomping down a plate of fish garnished with curd or vinegar, all the while getting drunk and dancing with some rented teenage girl, enticing her by shaking his pot belly and pumpkin patch's worth of saggy ass.

That's exactly the kind of man—fat, gluttonous, licentious, corrupt, a cheat and a gentleman—this country and system were set up to serve. All the shiny stores, the legions of police, battalions of soldiers: they existed to cater to the pleasure and gratification of that man. If I worked as an organic chemist, I'd have to devote my whole life to churning out tasty and good-for-you consumables for that man, Rahul thought. That life, which the compassionate creator of the universe, acting with great kindness, has given, once and only once, to worthless me.

Shit! The bastard is wheezing, one foot dangling in the grave, unable to walk properly because he's so fat. But he's still munching away. He needs one thing after the next to put in his mouth. His palate requires new flavors all the time. Scientists all over the world are researching how best to please his tongue. All five senses of his embarrassing flabby body require cutting-edge pleasures and never-ending kicks. His hippo-like snout calls for all styles of fragrances. The entire perfume industry exists in order to eviscerate any odors before they get to his nose. As an organic chemist, my talent, genius, and creativity would be pressed into the service of satisfying the ever-growing lust of that man's senses and fulfilling the desires of that libertine tub.

And this is man that women everywhere

कनिनू दा जब बोलने लगते तो राहुल को ऑर्गेनिक केमिस्ट्री बकवास लगने लगती। क्या करूँगा इसको पढ़कर? किसी ब्रूएरीज़ या किसी फूड प्रोसेसिंग मल्टी नेशनल इंडस्ट्री में केमिस्ट बन जाऊँगा। या किसी युनिवर्सिटी-कालेज में लेक्चरर। वह अपने भवष्य के बारे में सोचता और उसे कोई मोटा, पदिपदि-सा आदमी, सुअर की तरह फचफच करके पज़ा खाते, दही या वनिगर में गार्नशिड मछली को कचर-पचर चबाते दिखाई देने लगता जो साथ-साथ में शराब भी पीता और धुत्त हो कर किसी करिये में लाई गयी टीन एज लड़की के साथ अपनी मटके जैसी तोंद और वशाल कद्दुओं जैसे ढीले-ढाले नतिबों को मटका-मटका कर नाचने लगता।

यही वह आदमी है—खाऊ, तुंदयिल, कामुक, लुच्चा, जालसाज़ और रईस, जिसकी सेवा की खातिर इस व्यवस्था और सरकार का निर्माण किया गया है। इसी आदमी के सुख और भोग के लिए इतना बड़ा बाज़ार है और इतनी सारी पुलिस और फ़ौज है। अगर मैंने आर्गेनिक केमिस्ट्री के बलबूते कोई नौकरी की तो इसी आदमी के खाने-पीने की चीज़ों को लगातार स्वादपिष्ट, पौष्टिक, और लज़ीज़ बनाने का काम मुझे अपने जीवन भर करना पड़ेगा। वह जीवन, जो मुझे अकचिन को इस ब्रह्मांड के करुणा सागर सूपटकिर्त्ता ने महान कृपा करके सिर्फ़ एक बार के लिये दिया है।

शट्टि! साला हाँफ रहा है, एक पैर कब्र में लटका है, मोटापे के कारण ठीक से चल नहीं पाता, लेकिन खाये जा रहा है। उसे खाने के लिये अनंत भोज्य पदार्थ चाहिए। उसकी जीभ को अनंत स्वाद चाहिए। सारी दुनिया के वैज्ञानिक उसकी जीभ को संतुष्ट करने की खातिर तमाम प्रयोगशालाओं में शोध कर रहे हैं। उसके लोंदे जैसे घृणित थुलथुल शरीर की समस्त इन्द्रियों को अनंत-अपार आनंद और बेइंतहा मज़ा और 'ककि' चाहिए। उसकी हृप्पोपोटेमस जैसे थूथन को तरह-तरह की खुशबू चाहिए। सारी परफ्यूम इंडस्ट्री इसी की नाक की बदबू मटाने के लिए है। एक कार्बनिक रसायन वैज्ञानिक के नाते मेरा काम होगा, इस भोगी लोंदे की एषणाओं और इसकी इन्द्रियों की नरितर



eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

are ripping their clothes off for. All the beauty parlors in the city have the women lie down and either wax the hair off, or use electrolysis, just as herdsmen used to shear their sheep for wool. Rahul watched how these middle- and lower-middle-class girls formed herds of lamb and burst into the beauty parlors that were sprouting up everywhere like mushrooms. They'd reemerge, sleek and varnished. Spreading their legs, they straddled that man's big belly. They were called "The Bold and the Beautiful" on TV, while he was the potbellied old-man known as "The Rich and the Famous."

The man was mighty indeed. The world's greatest evil geniuses fashioned him by dint of hard work, ingenuity, capital, and patented techniques. New technology played an important role in his creation. What kind of powers were at the man's disposal? We can only begin to guess while watching his true story, collecting centuries' worth of theories, opinions, principles, philosophies, and ideas carefully crafted throughout history. And then, in one fell swoop, reducing them all to rubble. He then sweeps up the remains, out back, and onto the rubbish heap that lies just behind his very own majestic bungalow. Those trashed principles were the ones that put checks on man's otherwise spiraling desires, while sanctifying other principles.

Don't eat too much, don't make too much money, don't harm too much, don't sleep too much, don't have sex too much, don't dance too much. All of those moral doctrines—also found in religious texts and in civic, scientific, and diplomatic books—have been tossed wholesale in the rubbish bin. In the final decades of the twentieth century, this man has seized all the forces of wealth and power and technology and has declared: freedom! *Freedom!* he cries. Let all your desires be awakened! Let all of your senses wander and graze upon this earth. Whatever is in this world is for your enjoyment. There is neither nation nor country. The entire

बढ़ती हवस को अपनी प्रतर्भा, ज्ञान और सृजन के द्वारा संतुष्ट करना।

यही वह आदमी है, जिसके लिए संसार भर की औरतों के कपड़े उतारे जा रहे हैं। तमाम शहरों के पार्लर्स में स्त्रियों को लटिकर उनकी त्वचा से मोम के द्वारा या एलेक्ट्रोलीसिस के जरिये रोये उखाड़े जा रहे हैं, जैसे पछिले समय में गड़रिये भेड़ों की खाल से ऊन उतारा करते थे। राहुल को साफ़ दिखाई देता कि तमाम शहरों और कस्बों के मध्य-नमिन मध्यवर्गीय घरों से नकिल-नकिल कर लड़कियाँ उन शहरों में कुकुरमुत्तो की तरह जगह-जगह उगी ब्यूटी-पार्लर्स में मेमनों की तरह झुंड बनाकर घुसती और फरि चकिनी-चुपड़ी होकर उस आदमी की तोंद पर अपनी टांगें छत्रितर कर बैठ जाती। इन लड़कियों को टीवी 'बोल्ड एंड ब्यूटीफुल' कहता और वह लुजलुजा-सा तुंदयिल बूढ़ा खुद 'रचि एंड फ्रेमस' था।

वह आदमी बहुत ताकतवर था। उसको सारे संसार की महान शैतानी प्रतर्भाओं ने बहुत परश्रम, हकिमत पूंजी और तकनीक के साथ गढ़ा था। उसको बनाने में नयी टेक्नालॉजी की भूमिका अहम थी। वह आदमी कतिना शक्तशाली था, इसका अंदाज़ा एक इसी तथ्य से लगाया जा सकत है कि उसने पछिली कई शताब्दियों के इतहास में रचे-बनाये गये कई दर्शनों, सध्दांतों और वचिरों को एक झटके में कचड़ा बनाकर अपने आलीशान बंगले के पछिवाड़े के कूड़ेदान में डाल कथिा था। ये वे सध्दांत थे, जो आदमी की हवस को एक हृद के बाद नयित्तरति करने, उस पर अंकुश लगाने या उसे मर्यादति करने का काम करते थे।

इससे ज़्यादा मत खाओ, इससे ज़्यादा मत कमाओ, इससे ज़्यादा हसिा मत करो, इससे ज़्यादा संभोग मत करो, इससे ज़्यादा मत सोओ, इससे ज़्यादा मत नाचो.... वे सारे सध्दांत, जो धर्म ग्रंथों में भी थे, समाजशास्त्र या वज्ज्ञान अथवा रजनीतकि पुस्तकों में भी, उन्हें कूड़ेदान में डाल दथिा गया था। इस आदमी ने बीसवीं सदी के अंतमि दशकों में पूंजी, सत्ता और तकनीक की समूची ताकत को अपनी मुट्ठियों में भर कर कहा था: स्वतंत्रता! चीखते हुए आज़ादी! अपनी



THE UNIVERSITY OF IOWA

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

planet is yours. Nothing is moral, nothing is immoral. There is no sin, no act of virtue. Eat, drink, and be merry. Dance! *Boogie-woogie*. Sing! *Boogie-woogie*. Eat! *Boogie-woogie*. Pig out! *Boogie-woogie*. Make that six-figure salary! *Boogie-woogie*. All of the earth's commodities are for your consumption! *Boogie-woogie*. And remember to count woman among those commodities. *Boogie-woogie*.

This mighty, porky man proposed a new doctrine that the Finance Minister of India readily agreed to and then himself dove right into the man's pocket. This was the principle: don't stop the man from eating. The food that falls from his plate could feed millions of starving people with his continental, restorative leftovers. Don't stop that man from chasing skirts. Popping Viagra like candy, he beds one girl after the next and readies them for the legions of unwitting Indian bachelors who may then lavish affection on them and take them as wives.

So that was the principle the man wove like a web around all four corners of the earth. Then he oversaw the change of civilization. All of the TV channels and computers were buzzing with the broadcast of his philosophy.

Here at end of the twentieth century and threshold of the twenty-first, it's come to this: people have begun to forget the names Premchand, Gandhi, Tolstoy, and Tagore. The bestselling book in stores today? *The Road Ahead*, by Bill Gates.

That rich, potbellied, gluttonous man was getting a massage in some expensive resort in Iceland, surrounded by several Miss Universes from the poor third world. Remembering something, he suddenly reached for his cell phone and dialed a number.

Miss Universe slipped him a Viagra, which he took. Then he squeezed her breasts. "Hallo!

सारी एषणाओं को जाग जाने दो। अपनी सारी इंद्रियों को इस पृथ्वी पर खुल्ला करने और वचिरने दो। इस धरती पर जो कुछ भी है, तुम्हारे द्वारा भोगे जाने के लिये है। न कोई राष्ट्र है, न कोई देश। समूचा भूमंडल तुम्हारा है। न कुछ नैतिक है। न कुछ अनैतिक। न कुछ पाप है, न पुण्य। खाओ, पियो और मौज करो। नाचो...SS। वूगी...वूगी। गाओ...SS वूगी वूगी। खाओ...! खूब खाओ। कमाओ, खूब कमाओ। वूगी...वूगी। इस जगत के समस्त पदार्थ तुम्हारे उपभोग के लिये है। वूगी...वूगी...! और याद रखो स्त्री भी एक पदार्थ है। वूगी...वूगी !

उस ताकतवर भोगी लोंदे ने एक नया सध्दिदांत किया था जसि भारत के वित्तमन्त्री ने मान लिया था और खुद उसकी परस में जाकर घुस गया था। वह सध्दिदांत यह था कि उस आदमी को खाने से मत रोको। खाते-खाते जैसे-जैसे उसका पेट भरने लगेगा, वह जूठन अपनी प्लेट के बाहर गरिने लगेगा। उसे करोड़ों भूखे लोग खा सकते हैं। कांटीनेंटल पौषटिक जूठन। उस आदमी को संभोग करने से मत रोको। वयाग्रा खा-खा कर वह संभोग करते-करते लड़कियों को अपने बेड से नीचे गरिने लगेगा, तब करोड़ों वंचित देशी छड़े उन लड़कियों को प्यार कर सकते हैं, उनसे अपना घर-परिवार बसा सकते हैं।

यही वह सध्दिदांत था, जसि उस आदमी ने दुनिया भर के सूचना संजाल के द्वारा चारों ओर फैला दिया था और देखते-देखते मानव सभ्यता बदल गयी थी। सारे टीवी चैनलों, सारे कंप्यूटरों में यह सध्दिदांत बज रह था, प्रसारित हो रहा था।

बीसवीं सदी के अंत और इक्कीसवीं सदी की दहलीज़ की ये वे तारीखें थीं जब प्रेमचंद, तॉल्सताँय, गांधी या टैगोर का नाम तक लोग भूलने लगे थे। कतिबों की दुकानों में सबसे ज़्यादा बिक रही थी बलि गेट्स की कतिब 'द रिड अहेड'।

वह तुंदयिल अमीर खाऊ आदमी, गरीब तीसरी दुनिया की नंगी वशि्व सुंदरियों के साथ एक आइसलैंड के किसी महंगे रसॉर्ट में लेटा हुआ मसाज़ करा रहा था।



THE UNIVERSITY OF IOWA

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

This is Nikhalani speaking on behalf of the I.M.F.
Get me to the Prime Minister!"

"Yes, Yes! Nikhalani-ji! How are you, sir?
This is the Prime Minister speaking."

"Stroke it gently... rub it a bit more! Oh, that's more like it," that man said, sweetly teasing Miss Universe, and then returned to his cell phone. "Why have you taken so long, man? Hurry up! The power sector, IT, Food, Health, Education, everything! Hurry up and privatize it! Quick, please. And sell of the public sector companies. Disinvest! I need to buy everything, man!"

"OK, OK, be patient. Your humble servant is doing his duty. But you know my problem. In this hodge-podge government, you can't expect all of the daal to soften at once, Nikhalani-ji."

"Take it in your mouth... *Lo... My Lolita.*" The Rich and the Famous potbellied one caressed Miss Universe's head and let out a groan of encouragement. "I'm disappointed, Panditji! How much money did I pump into your party funds? And the donations, the deposits—all direct! You people move as fast as a dirty earthworm. How are we gonna fix the economy at this rate? You haven't even cut off the subsidies yet!"

"It'll happen, Nikhalani-ji! I've already begun the food oil importation. That's why farmers with sunflower, soybean, and oilseed crops were wiped out. If we took away their subsidies right after that, there'd be an uproar. Your instructions are being carried out, don't worry. We're just taking one step at a time."

"Hurry up, Panditji! I've got high blood pressure. This much excitement isn't good for my health. Let those sisterfucking farmers starve. OK?"

The man turned off his cell phone and

अचानक उसे कुछ याद आया और उसने सेल फोन उठाकर एक नंबर मलियाया।

वशिव सुंदरी ने उसे वय्याग्रा की गोली दी, जसि नगिल कर उसने उसके सूतन दबाये। 'हेलो! आयम नखिलाणी, स्पीकगि ऑन बेहाफ्र ऑफ़ द आइ. अम. एफ़। गेट मी टु दे प्राइम मनिस्टर!'

'येस ...येस ! नखिलाणी जी! कहिये, कैसे हैं ? मैं प्रधानमंत्री बोल रहा हूँ। '

'ठीक से सहलाओ! पकड़कर! ओ. के.!' उस आदमी ने मसि वर्ल्ड को प्यार से डांटा फिर सेल फोन पर कहा—' इत्ती देर क्यों कर दी...साई! जल्दी करो! पावर, आई टी, फूड, हेल्थ, एजुकेशन... सब! सबको प्रायवेटाइज़ करो साई ! ... ज़रा क्वकि! और पब्लिकि सेक्टर का शेयर बेचो....! हमको सब ख़रीदना है साई...! '

'बस-बस! ज़रा-सा सबर करें भाई ... बंदा लगा है ड्यूटी पर। मेरा प्रॉब्लम तो आपको पता है। खचिड़ी सरकार है। सारी दालें एक साथ नहीं गलतीं नखिलाणी जी। '

'मुँह में ले लो। लोल...माई लोलदि' रचि एंड फ्रेमस तुंदेयल ने वशिव सुंदरी के सरि को सहलाया फिर 'पुच्च...पुच्च की आवाज़ नकाली। 'आयम, डिसअपायंटेड पंडजिजी ! पार्टी फंड में कतिना पंप कया था मैंने। हवाला भी, डायरेक्ट भी... केंचुए की तरह चलते हो तुम लोग। एकाँनमी कैसे सुधरेगी? अभी तक सब्सिडी भी ख़त्म नहीं की!'

'हो जायेगी...नखिलाणी जी! वो आयल इंपोर्ट करने वाला काम पहले कर दिया था, इसलिए सोयाबीन, सूरजमुखी और तलहन की खेती करने वाले किसान पहले ही बरबाद थे। उसके फ़ौरन बाद सब्सिडी भी हटा देते तो बवास हो जाता... आपके हुकुम पर अमल हो रहा है भाई... सोच-समझ कर कदम उठा रहे हैं'

'जल्दी करो पंडति! मेरे को बी. पी. है। ज़्यादा एंक्ज़ायटी मेरे हेल्थ के लिए ठीक नहीं। मरने दो साले किसानों बैचो...को...ओ.के...'



THE UNIVERSITY OF IOWA

took a big gulp of scotch. Unwinding, he said, "Where's that runner-up from Venezuela? Send her in."

III

Kinnu Da addressed Rahul. "The most extraordinary thing about the adivasis is that they have so few needs. They cause very little damage to the environment. I've documented adivasi communities in Singhbhum, Jharkhand, Mayurbhanj, Bastar, and the Northeast who still practice slash-and-burn agriculture and confine themselves to raw, roasted, or boiled foods. They won't even fry their food. This is man in his natural state. And keep in mind, they fought like hell against the British for autonomy and self-rule. But historians never included that chapter in their versions of history. The reality is that history is a document of power and politics. Whichever class, caste, or ethnic group is on top will fashion history to suit its needs. I've always said that the history of this indigenous state and its people remains to be written."

Rahul was afraid. Just a few days back he'd seen a film called *Stigmata. The messenger will be silenced*. Truth and information are two different things. Truth is like dynamite to the information industry. Therefore, the truth must be crushed. *The truth must be defused*.

Pitter-patter. A leaf falls.

Pitter-patter. A sacred fruit full of nectar drops silently and too soon in a barren place.

Pitter-patter. Another murder or suicide will be committed, buried with scant notice on page three in tomorrow's paper.

Pitter-patter, pitter-patter! Time is passing. The earth is spinning on its axis.

Kinnu Da kept getting transferred from

उस आदमी ने सेलुलर ऑफ़ किया, एक लंबी घूंट स्कॉच की भरी और बेचैन हो कर बोला, 'वो वनिज़िएला वाली रनर अप कहाँ है। उसे बुलाओ।'

*

कनिनू दा ने राहुल से कहा, 'आदवासियों की सबसे बड़ी वंशिषता यह है कि उनकी ज़रूरतें सबसे कम हैं। वे प्रकृति और पर्यावरण का कम से कम नुकसान करते हैं। सहिभूम, झारखंड, मयूरभंज, बस्तर और उत्तरपूर्व में ऐसे आदवासी समुदाय हैं जो अभी तक छटिवा या झूम खेती करते हैं और सरिफ़ कच्ची, भुनी या उबली चीज़ें खाते हैं। तेल में फ्राइ करना तक वे पसंद नहीं करते। वे प्राकृतिक मनुष्य हैं। अपनी स्वायत्तता और संप्रभुता के लिए उन्होंने भी ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ़ महान् संघर्ष किया था। लेकिन इतिहासकारों ने उस हस्से को भारतीय इतिहास में शामिल नहीं किया। इतिहास असल में सत्ता का एक रजनीतिक दस्तावेज़ होता है... जो वर्ग, जाति या नस्ल सत्ता में होती है, वह अपने हतियों के अनुरूप इतिहास को निर्मित करती है। इस देश और समाज का इतिहास अभी लिखा जाना बाकी है।'

राहुल डर गया। उसने कुछ दिनों पहले ही 'स्टिग्माटा' नाम की फ़िल्म देखी थी। 'द मेसेंजर विल बी सिलेंस्ड।' ईश्वर के दूत को ख़ामोश कर दिया जाएगा। सच कोई सूचना नहीं है। सूचना उद्योग के लिए एक डायनामाइट है। इसलिये सच को कुचल दिया जाएगा। द ट्रुथ हैज़ टु बी डेफ़्यूज़्ड।

टप्। एक पत्ता और गरिगा।

टप्। एक पवतिर फल असमय अपने अमृत के साथ चुपचाप किसी नरिजन में टपक जाएगा।

टप्। एक हत्या या आत्महत्या और होगी, जो अगले दिन किसी अख़बार के तीसरे पृष्ठ पर एक-डेढ़ एंच की ख़बर बनेगी।



eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

one adivasi region to the next. *He's crazy, a real nutcase*—that's how his colleagues in the civil service talked about him behind his back. *All that time in government service, and he's broke, except for his pension. He can barely afford a flat in Delhi.*

Rahul started to sour of organic chemistry, which began to smell of the stench of vinegar and fermentation. The entire field became synonymous with a chamber filled with the fat man's belches and body odor.

So instead, I'll do an MA in anthropology, and then a PhD, Rahul thought. And I will endeavor to reach the root of this problem known as mankind. O supreme one! Give me the strength and faith to discover how Satan managed to sabotage history for his own benefit!

But what about Madhuri Dixit? And her back?

And her startled, doe-like eyes?

Rahul crumpled a piece of paper into a ball, loaded it into the slingshot, and drew it back as far as he could. *Pffffff!* The paper ball whizzed through the air and hit Madhuri Dixit right on the back.

"Ooooooooooh!" came her sweet voice, soaked in music and infused with quivering pain. The doe turned her head and looked lovingly at her hunter.

"Thank you, Rahul! Thank you for the injury. I love you!"

IV

It was the second month after the beginning of the term. The university was known as the "Cambridge of India" and it spread over a few hundred acres surrounded by mountains

टप्! टप्! टप्! समय बीत रहा है। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूम रही है।

कनिनू दा को बार-बार आदवासी इलाके में ट्रांसफर कर दिया जाता। वे सनकी हैं, पगलैट हैं—नौकरशाही में यह चर्चा आम थी। इतने साल आई.ए.एस. अधिकारी रहने के बाद भी उनके पास अपने पी.एफ़. के अलावा कोई पैसा नहीं। वे दिल्ली में एक फ्लैट खरीदने के लिये परेशान हैं।

राहुल को आर्गेनिक केमिस्ट्री से अरुचि हो गयी। उस बषिय में उसे बनिगर की, फ़र्मेटेशन की, तेज़ गंध आती। मोटे भोगी आदमी की डकार और अपान वायु से भरे हुए चेंबर का नाम है आर्गेनिक केमिस्ट्री। मैं एंथ्रोपोलॉजी में एम.ए. करूँगा, फरि पी-एच.डी। और इस मानव समस्या के उत्स तक पहुंचने की कोशिश करूँगा। इतिहास को शैतान ने किस तरह अपने हति में सबोटाज़ किया है, इसके उद्गम तक पहुंचने की मुझमें शक्ति और नपिठा दे, हे परमपति!

लेकिन माधुरी दीक्षिति ?

और उसकी पीठ ?

और उसकी चौंकी हुई हरिणी जैसी आँखें ?

राहुल ने गुल्लक में कागज़ की एक गोली बनाकर रखर कान तक कीच और सटाक! कागज़ की गोली माधुरी दीक्षिति की पीठ पर जाकर लगी।

'उई....5' एक मीठी-सी, संगीत में डूबी, उत्तेजक पीड़ा भरी आवाज़ पैदा हुई और गर्दन मोड़ कर उस हरिणी ने अपने शिकारी को प्यार से देखा।

'थैंक यू राहुल! फ़ॉर द इंजरी !... आय लव यू'

*

एडमिशन के बाद का यह दूसरा महीना था। दूर-दूर तक बखिरी पहड़ियों में कई सौ एकड़ के क्षेत्र तक फैला यह विश्व विद्यालय भारत का कैंब्रिज कहा जाता था। जापान, इंडोनेशिया, फ़िजी मॉरिशस से लेकर कई अफ़्रीकी देशों के छात्रों यहाँ आकर पढ़ते थे। यहाँ के भूगर्भ विज्ञान विभाग

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

scattering far into the distance. Students came here to study from Japan, Indonesia, Fiji, Mauritius, and even from a few African countries. The chair of the geology department was the world famous Professor Watson. He'd turned down offers from all the major academic institutions in the U.S., France, and Germany in favor of India, since the astonishing variety of what he found here was better for his research.

"This country is a living museum of wonders. Countless cultures, histories, races, and castes... We've found evidence of human civilization here as long ago as several hundred thousand years: alive, robust, burning brightly. And what applies to people equally applies to the ground we're standing on."

Dr. Watson went on. Bending over, he picked up a rock, which he examined with great care. "Look at this. This rock reveals the lava stage of the mountain on which this university was established. Look carefully. It's actually a fossil, a thousand—maybe a hundred thousand years old. And it's the fossil of some aquatic life. Right on this spot, where we're standing now, was once an ocean."

The people standing around suddenly looked confused. An ocean? Here? In Madhya Pradesh?

Rahul was pleased. He'd been assigned to the second floor of the Tagore hostel, Room 252, with a roommate, O.P., Omkar Prasad. O.P. was six foot three, thin like a bamboo stick, with a neck like a heron's, bobbing at every step. He was a joker and a chatterbox and declared, "I'll get married to four-and-a-half-foot dwarf. It'll really give these mountain people something to look at when we make love in the 'standing position.'"

Rahul pictured himself strolling in town in the shadow of the mountain. Looking up into

के अध्यक्षा पुरो. वाट्सन अंतरराष्ट्रीय स्तर के स्कॉलर थे। उन्होंने अमेरिका, फ्रांस और जर्मनी से मिलने वाले तमाम एकेडेमिक ऑफर्स को ठुकराकर इसलिये भारत में रहने का निर्णय लिया था क्योंकि जियोलाजी के अध्ययन और शोध के लहजा से जितनी विविधता इस देश में थी, वह बलिष्ण थी।

'यह देश एक अद्भुत जीता-जागता संग्रहालय है। अनेक सभ्यताएं, अनेक इतिहास, असंख्य नस्लें, प्रजातियां... मानव सभ्यता के कई लाख साल का अतीत यहाँ ज़िदा, सक्रिय, धड़कता हुआ देखा जा सकता है। और ठीक यही बात यहाँ की धरती पर भी लागू होती है।'

डॉ. वाट्सन कहते। फिर झुककर एक पत्थर उठाकर उसे देखते हुए गंभीर हो जाते—'इसे देख रहे हो। यह युनिवर्सिटी जिस पहाड़ी पर बसी हुई है, ये पत्थर इसके लावा स्ट्रेज को प्रगट करता है। देखो, गौर से देखो। ये फॉसिल है। कई हज़ार, शायद एक लाख साल पुराना। और यह किसी सबमेराइन जीव का फॉसिल है। यहाँ, ठीक इसी जगह, जहाँ हम खड़े हैं...पहले समुद्र था।'

इर्द-गर्द खड़े लोगों की आँखें आश्चर्य से फैल जाती। समुद्र? यहाँ? मध्यप्रदेश में?

राहुल का मन लग गया। उसे टैगोर हॉस्टल की दूसरी मंजिल में कमरा नंबर 252 एलाँट हुआ। उसका रूम मेट था। ओ.पी. ओंकार प्रसाद। छह फुट तीन इंच लंबा, बांस की लाठ जैसा सीधा तना हुआ, दुबला-पतला। बगुले जैसी लंबी गर्दन, जो उसके चलने पर हर कदम लचकती। बहुत हँसोड़, बहुत बातूनी। ओ.पी. कहता, 'मैं किसी ठगिनी साढ़े चार फुट की हाइट वाली कन्या से शादी करूँगा। स्टैंडिंग पोज़ीशन में प्यार करते हुए इन पहाड़ियों का नज़ारा ही अलग होगा।'

राहुल ने कल्पना की: वह पहाड़ी की तलहटी पर, जहाँ शहर है, खड़ा है और नीचे से ऊपर की ओर देख रहा है। रात है पूर्णमासी की। चाँद पूरा का पूरा किसी जलती हुई सोने की थाली की तरह आकाश में टंगा है और उधर...सबसे ऊँची पहाड़ी की चोटी पर एक खूब लंबा दीर्घकाय पुरुष दगिंबर खड़ा है...!

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

the sky he admires the full moon, shining like a golden plate in the sky. His gaze wanders over the peak of the highest mountain where he notices a gigantic man, naked as Adam.

Rahul makes out an impish apparition fastened to the giant's waist like a tiny woman, and then the wind carries a *thump* to Rahul's ears—a sound like someone drumming on an hourglass-shaped damaru. *Thump! Thump! Thump!*

The figures sway back and forth. Who are they? O.P. and his fantasy girl? Or the maiden of the rock? The daughter of the Himalayas? It's Shiva and Parvati!

So this was the cosmic union from which the world was created. *Thump! Thump! Thump!*

*namami samisam niwaran rupam, vibhuam
vyapakam bahma ved swarupam
ajuam nirgunam nirvikalpam niriham,
cidakasamakam vasam bhajeham
nirankar monkar mulam turiyam*

Father used to get up at half past four every morning, bathe, and then perform puja to Shiva. Sometimes this chanting, these lines of prayer echoing through the house woke Rahul in the silence of the dawn.

V

O.P. proved to be a very good friend. To meet his expenses, Rahul was forced to tutor two students, and none other than O.P. had arranged it. He'd been studying at the university for two years. He'd already completed his M.Sc. in criminology and now was doing further research. O.P. didn't need to worry about funds, since he was receiving a prestigious UGC scholarship.

और उसकी कमर के साथ लपिटी हुई है एक छोटी सी बावन नारी आकृति... हवाओं में जैसे डमरू बज रहा है।

थप्प... थप्प... थप्प...

आकृतियाँ हलि रही हैं। कौन हैं वे आकृतियाँ?

ओ.पी. और उसकी मन चाही कन्या या... या नग कन्या...

पर्वत की बेटी... पार्वती और नटराज शिव !

और यह सृष्टि का आदिमैथुन

है...थप्प...थप्प...थप्प।

*नममश्मिमीशां नरिवाण रूपं, वभिं व्यापकं बहुम वेद
स्वरूपं*

*अजुं नरिगुणं नरिक्विल्पं नरिहं, चदिाकाशमाकाश
वासं भजेहं*

नरिंकार मोंकार मूलं तुरीयं...

पतिाजी हर रोज़ सुबह साढ़े चार बजे उठकर नहाते थे और फिर शिव की पूजा करते थे। कभी-कभार राहुल की नींद टूट जाती तो प्रार्थना की ये पंक्तियाँ सुबह के सन्नाटे में सारे घर में गूँज रही होती।

*

ओ. पी. बहुत अच्छा दोस्त साबित हुआ। राहुल को अपना खर्च चलाने के लिए दो ट्यूशन देने पड़ते थे, जिनका जुगाड़ ओ.पी. ने ही किया था। वह युनिवर्सिटी में दो साल पहले से था। यहीं से उसने क्रिमिनॉलॉजी में एम. एस-सी. किया था और अब रसिर्च कर रहा था। पैसे की उसे कमी नहीं थी, क्योंकि उसे यू.जी.सी. की स्कॉलरशिप मिल रही थी।

लेकिन जल्द ही पता चल गया कि इस

वश्वविद्यालय का सारा स्वरूप तेज़ी से बदल रहा है। पछिल्ले चार-पाँच सालों से बदिशी छात्रों ने यहाँ एडमिशन लेना बंद कर दिया था। डॉ. वाट्सन जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के बदिवान् प्रोफ़ेसर जल्द से जल्द यहाँ से कहीं और चल देना चाहते थे। स्थितियाँ बगिड़ रही थीं।

पता चला, पछिल्ले साल मारीशस से आई एक छात्रा को कुछ लोकल गुंडे उठाकर ले गये थे और बलात्कार करने के

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

Rahul discovered that the very contours of the university were changing fast. In the past few years, foreign students had stopped applying. Internationally renowned thinkers like Dr. Watson wanted out, and were putting out feelers elsewhere. The situation was deteriorating.

He heard about the female student from Mauritius who'd been abducted last year by some goondas who then had raped and killed her. The thugs threw her body into a ditch under a footbridge. O.P. warned Rahul, "You'd better be careful and keep your wits about you. When you go into town, don't start anything with anyone. Even when you're buying a ticket at the cinema, don't flash a 100- or 500-rupee note, because it's not just the guy sitting in the booking window. It's everyone: the paan seller and the chaat vendor; they're all in on the racket. If they suspect you're the boy of some Assamese high roller, they'll come by the hostel any old day and whisk you off. Every year you hear about dozens of abductions. It's an old dacoit stomping ground. Devi Singh, Malkhan Singh, Mohar Singh, Tahsildar Singh, that whole gang of dacoits used to prowl around here and cause trouble."

Rahul realized that O.P. hadn't been exaggerating. Even the postman was in cahoots with the goondas. Money orders from families of students from South India or distant places usually arrived on the first of the month. The goondas knew exactly which boys got how much. As soon as the clock struck 9:30 on the night of money-order day, a couple of Jeeps would pull up to the hostel. Out they'd come bearing hockey sticks, cycle chains, iron rods, homemade pistols—any weapons they could get easily get their hands on cheap from the local mechanic. They addressed one another with nicknames like Ajju, Lacchu, Acchan, Babban, Cuppy, Penda, Guddu, Dabba, Boxy. To denote rank and seniority they'd add little brother, elder brother, or guru. So there'd be Acchan guru or a brother Lacchu. Every so often someone would even achieve the rank of

बाद उसको मार कर उसकी लाश तलहटी की एक पुलिया के नचि फेंक दी थी। ओ.पी. ने राहुल से कहा था, 'यहाँ बहुत सावधानी और होशियारी से रहना है। शहर की ओर जाओ तो वहाँ किसी से पंगा लेने की कोशिश मत करो। अगर किसी सनिमा हाल में टिकिट भी खरीदो तो सौ या पाँच सौ के नोट जेब से मत कलालो। वहाँ बुकगि वडिों में बैठने वाला आदमी ही नहीं, पनवाड़ी और चाट वाले तक अपराधियों के एजेंट हैं। अगर शक हुआ कि तुम किसी पैसे वाले आसामी के लड़के हो, तो किसी भी दिन हॉस्टल आकर तुम्हें उठाकर ले जाएँगे। हर साल दर्जनों एब्डक्शन के केस यहाँ होते रहते हैं। पुराना डकैत इलाका है। देवी सहि, मोहर सहि, तहसीलदार सहि... सारे के सारे डाकू इसी पट्टी में वरदात किया करते थे।'

ओ.पी. की बात में कतिनी सच्चाई थी, इसका पता जल्द ही चल गया। पोस्टमैन तक लोकल गुंडों से मिला हुआ था। हॉस्टल में दक्षिण भारत या दूर दराज से आने वाले छात्रों के भरों से मनीआर्डर अक्सर महीने के पहले सप्ताह की तारीखों में आते थे। किस लड़के के पास कतिने का मनीआर्डर आया, गुंडों के पास इसकी पूरी सूची होती थी। इन तारीखों को, रात में नौ-साढ़े नौ बजते ही, हॉस्टल के परिसर में एक-दो जीपें आकर रुकतीं। छुरे, हाँकी की स्टकि, साइकलि की चेन, बघनखे, राड और कभी-कभार देशी कट्टे, जो मामूलीइ कीमत में इस इलाके के लोहारों के पास आसानी से मिल जाते थे, इन गुंडों के हथियार होते थे। अजूजू, लच्छू, अच्छन, बबबन, लोठा, पेंदा, गुड्डू, डब्बा, बकसा जैसे उनके नाम होते थे और भाई, दाऊ या गुरू का सम्बोधन उनके साथ सीनियारिटी और रुतबे के हिसाब से जुड़ा होता था। मसलन, अच्छन गुरू, लच्छू भाई। कभी-कभी उस्ताद भी—परसू उस्ताद। इन लोगों के संबंध स्थानीय रजनीतकि नेताओं, पुलिस आदिके साथ तो होते ही थे, वशिंवदियालय के प्रशासन, छात्र-अध्यापक रजनीतकि में भी उनकी खासी दखल होती थी। मणपुरि, अरुणाचल, असम जैसे उत्तर पूर्व के प्रांतों से आने वाले छात्रों को ये गुंडे 'मल्लू' या 'मंकी' बोलते थे और दक्षिणी भारत के किसी भी राज्य से आने वाला लड़का इनके लिए 'रुंडू' होता था।



THE UNIVERSITY OF IOWA

Ustad—Parasu Ustad, for example. These guys were connected with local politicians and police, and they also wielded considerable influence in student politics and within the university administration. The goondas called students who came from Assam, Manipur, or Arunachal “monkeys” or “mallu”; South Indians or students from other countries were “rundu.”

A Manipuri student named Sapam Tomba lived in Room 212. He was handsome, robust, a quick student and a good badminton player. He and Rahul had gotten to know each other well. Sapam was in his first year of an M.Sc. in botany. A couple of weeks ago, at home near Imphal, his older brother, a primary school teacher, was killed by gunfire. Sapam cried and cried. He wasn't able to return to Manipur to attend his brother's funeral: first because he didn't have enough money for the trip, and second because his father forbade him from coming home. Incidents related to the insurgency in Manipur were on the rise, and the whole state was overrun with the Indian Army and Border Security Force personnel that executed “combing operations” and had “encounters” every day.

“If I go home, they'll say I am a PLA member and shoot me. It's safer here than there,” Sapam said.

The goondas had gotten into Sapam's room, too. They took his watch, 600 rupees from a money order, a tea kettle, and a thermos. But that wasn't the worst of it. They made Sapam strip naked and tried to make him pee on the hot electric heater. They tortured him until he gave up; Sapam passed out cold from the electric shock. He still hadn't gotten back to normal. It broke him. He'd cry and ask, “Where should I go? How can I study? Tell me what to do!”

O.P., Rahul, and a few other students pitched in to pay Sapam's mess bill and school fees. “Manipuri people want to separate from

रूम नं. 212 में एक मणिपुरी छात्र रहता था। सापाम तोंबा। सुंदर, गोल-मटोल, पढ़ने में तेज़ और बैडमिंटन का अच्छा खिलाड़ी। राहुल के साथ उसकी अच्छी पहचान हो गयी थी। सापाम बॉटनी में एम.एस.सी. प्रीवियस कर रहा था। अभी दो हफ्ते पहले इंपाल के पास एक गोलीबारी में उसके सगे बड़े भाई की मृत्यु हो गयी थी, जो वहाँ किसी प्रायमरी स्कूल का शिक्षक था। सापाम फूट-फूटकर रोता रहा। वह मणिपुर अपने भाई के अंतिम संस्कार में शामिल होने नहीं जा पाया था, क्योंकि उसके पास करिये के पैसे नहीं थे। दूसरे, उसके पतिजाजी ने उसे वहाँ आने से रोका भी था। माणिपुर में इंसरजेंसी की घटनाएँ बढ़ गयी थी। पूरा मणिपुर सेना और बी.एस.एफ़. के हवाले था। रोज़-रोज़ कांबंगि ऑपरेशंस और एनकाउंटर्स।

‘मैं अगर उदर जाएँगा तो मजि पी.एल.ए. का मेंबर बताकर वो लोग गोली मार देंगा। हम उदर से ज़्यादा इदर सेफ़ है।’ सापाम ने कहा था।

गुंडे सापाम के कमरे में भी घुसे थे। उन्होंने उसकी घड़ी, मनीआर्डर से आये छह सौ रुपये, चाय की एक केटली और एक थर्मस उससे छीन ली थी। इतना ही नहीं, उन्होंने सापाम को मजबूर किया था कि वह नंगा होकर बजिली के जलते हीटर पर पेशाब करे। टॉर्चर से हारकर जब सापाम ने ऐसा किया तो उसे ज़ोरों का करेंट लगा और उस शॉक से वह बेहोश हो गया। वह अभी तक नार्मल नहीं हो पाया था। सापाम टूट गया था। ‘हम कदिर जाए... ? हम पड़ाई कैसे करेंगे? मजिको बताओ।’ वह रो रहा था।

ओ.पी., राहुल और दो-तीन अन्य लड़कों ने मलिकर उसका मेस बलि पटाया। फ़्रीस जमा करवाई। ‘मणिपुरी लोग इंडिया से अलग होना चाहते हैं। अगर आज मत संग्रह हो जाये, तो कश्मीर से ज़्यादा प्रतशित लोग अलगाव के पक्ष में मणिपुर और नागालैंड में वोट डालेंगे।’ ऐसा क्यों हुआ?

सापाम कहता था, कि उसकी बुआ और मणिपुर की बहुत से औरतें जो वधिया हो जाती थीं, वे वृंदावन आ जाती थीं। गाँव-गाँव वहाँ रास लीलाएँ होती थीं। कृष्ण के कीर्तन होते थे। सत्रहवीं सदी में बंगाल से आकर गौरांग महाप्रभु



India. If an election were held today, the number of Manipuris and Nagas voting for separatist camp would exceed even the numbers in Kashmir."

How did this happen?

Sapam said that many women in Manipur who have become widows, including his own aunt, have gone to Brindavan, home of Krishna. The famous Ras Lila, performed in honor of Krishna, was now staged in villages all over Manipur, and the festivals included devotional hymns in praise of Krishna. In the seventeenth century, Gaurang Mahaprabhu Chaitanya spread his devotional poetry and songs from Bengal until they echoed throughout Manipur. The result was that all of the people, including adivasis, became Vaishnavas, devotees of Krishna. These simple, sweet, straightforward, thoughtful people, living the difficult life of the mountains, Mongol or Tibeto-Burmese Meiteis and adivasis, attached surnames like Sharma and Singh to their names. As if Chaitanya had flooded their spiritually barren souls with a torrent of salubrious nectar. In 1947, after partition, Manipur held a referendum and by the will of its people decided to join the Republic of India.

So why has it come to this? Within fifty years, why do 99% of the people want independence from India?

Sapam spoke: "The Mayang foreigners looted so much from us. They took our girls. They humiliated us. The market, trade, employment—the Mayang controlled everything. If you were daring enough to say something, you'd be labeled a secessionist. If the army left Manipur, there'd be independence the next day." He continued, "During the British time, we gave our blood to Subhash Bose's Indian National Army. We fought for India's independence all the way to Burma. Now we'll fight for our own independence. Mark my words: we'll be free from India before Kashmir is."

चैतन्य ने अपने पदों और कीर्तनों से पूरे मणिपुर को गुंजा किया था। वहाँ के आदिवासियों समेत सारे लोग वैष्णव हो गये थे। उनके नाम के अंत में शर्मा, सहि जैसे सरनेम जुड़ गये थे। सीधे-सरल, भोले-भावुक, पहाड़ों का कठिन जीवन जीते मंगोल या तबिबती-बर्मी समूह के मेतेई और आदिवासी। जैसे चैतन्य ने उनके रक्ति सांस्कृतिक जीवन को एक नयी रस मयी नदी के जल से आप्लावति कर दिया था। आज़ादी के समय, 1947 के बाद स्वेच्छा से, जनता की मांग पर मणिपुर ने भारतीय गणराज्य का एक अंग बनने का चुनाव किया था।

अब ऐसा आखिर क्यों हो गया? पचास साल के भीतर-भीतर वहाँ का हर व्यक्ति, सौ में से ननियानवे, इस इंडिया से छुटकारा क्यों पाना चाहता है ?

'मायांग (परदेसियों) ने हमें बहोत लूटा। हमारी लड़की ले गये। हमें बेवकूफ बनाया। हमारा बाज़ार, दरेड, नौकरी सब पर मायांग का कब्ज़ा है। कुछ बोलो तो सेसेनसिट कहता है। तुम आज उदर से आर्मी हटा लो, कल ही आज़ाद हो जाएगा' सापाम कहता है—'अंग्रेज़ों के टाइम पर हमने सुभाष बोस के आइ.एन.ए. को अपना बलब दिया था। बर्मा तक जाकर इंडिया की आज़ादी के लिये हमारा लोग लड़ा। अब हम अपनी आज़ादी के लिये लड़ेगा। लखि के ले लो, कश्मीर से पहले हम इंडिया से आज़ाद होगा।'

राहुल को लगा युनविर्सिटी की ज़िंदगी उतनी आसान नहीं है, जतिनी वह समझ रहा था। यहाँ सुरक्षित होकर सरिफ़ स्टडी करना, एंथ्रोपोलॉजी पढ़ना, मानव सभ्यता और नस्लों के उत्स को जानना और माधुरी दीक्षिति की पीठ को देखते रहना उतना सरल नहीं है। कभी-भी वे लोकल गुंडे कमरे में घुसंगे और कनपटी पर कट्टा लगा देंगे। यह एक क्रूर, दुच्चा, अपराधी समय है, जिसमें इस वक़्त हम लोग फंसे हैं। यह ठगों, मवालयों, जालसाज़ों, तस्करों और ठेकेदारों का समय है। और इस वक़्त हर ईमानदार, शरीफ़ और सीधा-सादा हडिस्तानी इस राज में कश्मीरी है या मणिपुरी है या फरि नक्सलवादी।

'पछिले महीने मुझे न्यू यार्क में एक सेमिनार में हसिसा लेने के लिये आमंत्रित किया गया। 500 डॉलर की

Rahul decided that university life wasn't as easy as he first thought. First you had to worry about security, and then the studying all the time, reading thick anthropology books, trying to get to the root of mankind and civilization, and gazing at Madhuri Dixit's back. It wasn't so simple. The local goondas could break in at any moment and put a gun to your head. We are prey living in a cruel, criminal, and degrading time. It's an age of thugs, counterfeiters, smugglers, and contractors. Nowadays, righteous and upstanding Indians suffer in this stew like Kashmiris, Manipuris, or Naxalites do.

Kinnu Da explained, "Last month I was invited to take part in a seminar in New York. I had the minimum 500 dollars with me. I'd never brought more cash than that, because I can't spend it. But this time, for the first time, they questioned me. I was asked very rudely, 'How are you going to get by with this? Why didn't you bring more with you?'" Kinnu Da continued, "The truth is that the world now belongs to the businessmen. They bring hundreds of thousands of dollars with them when they travel. Billions of transactions occur. They can't fathom that there are still some people left in India who aren't interested in making a fortune, and who travel to America or France not to do business, but for academic or other reasons."

So globalization exists only for those who are part of the world market: speculators, businessmen, bootleggers, criminals, government ministers, and officials. Suppose someone like the humanitarian Dr. Kotnis wanted to go to China, or someone like the communist-agitator-Tibeto-Buddhologist monk Mahapandit Rahul Sankrityayan wanted to go to Russia or Central Asia. Would it be possible?

"Not at all!" says Kartikeya. "This is the end of the civil society. It's vanished from everywhere. Only governments, companies,

स्वीकृत न्यूनतम मुद्रा मेरे पास थी। उससे ज्यादा रकम मैं कभी भी नहीं ले गया। इतने पैसे भी खर्च नहीं होते। लेकिन इस बार पहली बा मुझसे पूछताछ की गयी। बड़े अभद्र और खोजी तरीके से, कितनी कम रकम में आपको काम कैसे चलेगा? आप और डॉलर्स क्यों नहीं ले जाते?' कनिनू दा ने बताया। 'दरअसल अब ये दुनिया ट्रेडर्स की, व्यापारियों की हो गयी है। वे लाखों डालर-फाउंड लेकर सफ़र करते हैं। अरबों-खरबों का ट्रांज़ेक्शन होता है। ये लोग मान ही नहीं सकते कि अभी भी हिन्दुस्तान में ऐसे लोग बचे हुए हैं, जन्हें बहुत दौलत नहीं चाहिए। और वे अमेरिका या फ़्रांस व्यापार करने नहीं, अकादेमिक या दूसरे कारणों से जाते हैं।'

तो क्या ये जो भू-मंडलीकरण हो रहा है यह उन्हीं के लिये है, जो विश्व बाज़ार के हिस्से हैं। सटोरिये, व्यापारी, तस्कर, अपराधी या सरकारी मंत्री-अफसर। अगर आज डॉ. कोटणीस जैसे लोग चीन जाना चाहें या राहुल सांकृत्यायन जैसे लोग रूस और मध्य एशिया, तो क्या यह संभव होगा?

'नॉट एट आल!' कर्तकिय ने जवाब दिया। 'दसि इज़ द एंड ऑफ़ द सविलि सोसायटी। अब कहीं कोई नागरिक समाज नहीं बचा। सरिफ़ सरकारें हैं, कंपनियां हैं, संस्थाएं हैं माफ़िया और गरिह हैं। और अगर अब भी तुम किसी लेखक, कवि या वद्वान को हवाई जहाज़ में सवार होकर वद्विषा जाते देखते हो, तो जान लो, वह किसी कंपनी, किसी व्यापारी, किसी संस्था या गरिह का सदस्य या दलाल है। आलवेज़ डाउट हज़ि इंटिग्रिटी।'

कार्तिकिय काजले पुणे से आया था। ज़िओलॉजी में रसिर्च के साथ-साथ सविलि सर्वसिज़ की तैयारी कर रहा था। उसने राहुल से भी सविलि की तैयारी के लिये कहा।

सापाम के अलावा उन गुंडों ने केरल के एक लड़के मधुसूदन को लूटने के बाद इतना मारा था कि वह डर के मारे दूसरी मंज़िल से नीचे कूद गया था और उसकी टांगें टूट गयी थीं। वह अस्पताल में एडमिटि था। राहुल ओ.पी. और कार्तिकिय के साथ उसे देखने हॉस्पिटल गया था। मधुसूदन के फ़ादर का कोचीन से टेलिग्राम आया था कि वह माइग्रेशन

institutions, the Mafia, and interest groups remain. If, by chance, you happen to see some writer, poet, or thinker sitting on a plane taking a trip abroad, you can be sure that he's just a middleman or lackey, on the take, working for some company, institution, or concern. *Always doubt his integrity!*"

Kartikeya Kajle was from Pune. As well as doing research in geology, he was getting ready for the civil service exam. He told Rahul that he, too, should try for it.

After Sapam, the goondas went after Madhusudan, a student from Kerala, who was beaten so badly that he jumped from the second floor in fright and wound up breaking his legs. Rahul, O.P., and Kartikeya went to the hospital to visit him. His father had written him a telegram instructing him to apply for an academic transfer and return to Cochin at once. Madhusudan was distraught. His entire career had been ruined.

One day, Rahul was with Anima, Aabha, Deepti, Manmohan, and Raju, headed from the department to the canteen near the library. Someone from group of six or seven boys hanging out by the side of the road threw a rock that hit him on the back of head. Anima shrieked. There was no blood. Then one of them shouted, "Hey big hero! Nice hair. Just like Rahul Ray."

"How can you be so rude," Anima scolded.

"Hey sister. Are you gonna bring that faggot over here for us? We'll turn him into our brother-in-law and make him a man. C'mon, what do you say!"

They started laughing.

"I don't think we should take this any further. Let's shut up and get out of here," Manmohan advised.

लेकर केरल लौट आये। वह परेशान था। उसका पूरा कैरियर बगड़ गया था।

एक दिन राहुल अपने वभिाग से अणमिा, आभा, दीपूत, मनमोहन और राजू के साथ नकिल कर लाइब्रेरी के पास बने कैटीन की ओर जा रहा था कि सड़क के कनारे पांच-सात लड़कों के झुंड में से किसी ने उसे पत्थर मारा। ढेला उसके सरि के पीछे लगा। अणमिा चीखी। खून नहीं नकिला था। तभी उस झुंड में से एक लड़के ने आवाज़ मारी... 'अरे ओए हीरो ! जुल्फ का स्टाइल तो एकदम राहुल राय वाला है...'

'ये क्या बत्तमीज़ी है,' अणमिा ने डांटा।

'काए दीदी! हमाए लाने इस हज़िड़े खों जीजा बनाय रई? अरे कउनो ठीक-ठीक मोड़ा खोजो।'

इसके बाद एक ज़ोरों का ठहाका लगा।

'इनके मुँह लगना ठीक नहीं। चुपचाप बढ़ लो।'

मनमोहन ने सलाह दी।

वे लोग चुपचाप चलने लगे। लगा कि सब कुछ शांत हो गया। लेकिन जैसे ही वे लाइब्रेरी के पास पहुँच कर कैटीन की ओर मुड़ने लगे, एक दूसरा दनदनाता पत्थर आकर आभा को लगा। वह चीख कर गरि गयी। उसका चश्मा फूट गया। माथे से खून बह रहा था।

'इतै युनविरसिटी में पढ़ने के लाने आये या लौंडियाबाज़ी करने के लाने। जे हम पैली वर्नगि दे राए है। संभल जाओ हीरो। नई तो बैंड बजा देंगे।' पीछे से उनमें से एक ने कहा, 'तुम्हाई तो बऊ की!'

'बऊ' का मतलब होता था, मां

वे लोग प्रॉक्टर के आफिसि शकियत करने पहुँचे।

इस हद तक दादागिरी और गुंडागर्दी अकल्पनीय थी। डिस्पेंसरी जाकर आभा की मरहम-पट्टी करवाई गयी थी। बनिा चश्मे के उसे ठीक से दखिता भी नहीं था। ऊपर से एंड सेमेस्टर टेस्ट सरि पर थे।

प्रॉक्टर डॉक्टर चतुरबेदी थे। उन्होंने सारी बातें सुनीं। एक टूथ प्रकि से अपने दाँतों में अटके सुपरी के टुकड़ों को कुरेदा, फरि गंभीर लेकिन काइयां आवाज़ में कहा, 'देखो, ये दिल्ली नहीं है, न लंदन। यहाँ ऐसा फ्रैशन कर के लड़कियों

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

Quietly, they started walking. A pall of silence had fallen over them. But as soon as they turned the corner to the canteen, another rock whizzed past and hit Aabha in the head. She cried out and fell down. Her glasses broke and blood streamed from her forehead.

"Did you come to this university to study or to womanize? This is our first warning. Watch yourself, hero. Otherwise we'll set your clock straight." From behind came another voice from among them. "And go fuck your baoo!"

"Baoo" means mother.

So they went to the proctor's office to lodge a complaint. This much bullying and abuse was unimaginable. Aabha went to the dispensary to have her wound dressed. She couldn't see without her glasses. And on top of everything else, finals were looming.

Dr. Chaturvedi was the proctor. He listened to the whole story while using a toothpick to dig at bits of supari caught in his teeth. Then he sat up straight and said in a serious but indulging voice, "Look, this isn't Delhi or London. If you go around having your fun with these kind of fashion girls, well, something's bound to happen. Everyone checks out the girls. Forget about the students, the teachers aren't that far behind. Today you got a rock thrown at you. Tomorrow you'll flunk your courses."

"But sir! We weren't having that kind of fun at all. We were just going to the canteen before our next period for some refreshments," Rahul countered.

"And where have you come from, mister smarty pants? And what's up with the hair, kid? Is that what girls go for nowadays?" Proctor Chaturvedi said sarcastically. "Look, mister, if making friends with girls is such a big hobby of yours, then at least put some money in your

के साथ मौज-मस्ती करोगे तो कुछ-न-कुछ तो होगा ही। लड़कियों पर तो सभी की नगिहा रहती है। स्टूडेंट को तो छोड़ो, टीचर भी पीछे नहीं। आज पत्थर खाया है, कल फ़ेल कर दिये जाओगे।"

"लेकिन सर, हम लोग कोई मौज-मस्ती नहीं कर रहे थे। हम अपने नेक्स्ट पीरियड के पहले सर्किफ़ रेफ़्रेशमेंट के लिये कैंटीन जा रहे थे।" राहुल ने तर्क दिया।

"कहाँ से आए हैं आप जनाब? ये माँग क्यों बीच से नक़ाली है? आजकल लड़कियाँ ऐसी स्टाइल पसंद करती है क्या?" प्रॉक्टर चतुर्वेदी ने व्यंग्य से कहा। 'देखो मसिटर, अगर लड़कियों से दोस्ती का इतना ही शौक है तो ज़रा अपनी पाकेट भारी करो। कार में चलो, पैदल क्यों खुले में घूमते हो इनके साथ। इतनी सारी कारें आती हैं सड़ि से एस कैपस में। उन टटिड ग्लास के भीतर क्या-क्या होता है, क्या हमें पता नहीं। अरे, इतने सारे होटल हैं, वहाँ जाओ। इस तरह घूमोगे तो ख़तरा तुम्हें नहीं, इन लड़कियों को है। यहाँ का एटमॉस्फ़ियर ठीक नहीं। दीवारों पर ऊटपटांग बातें लिख दी जाएँगी। तुम्हारा क्या, बदनाम हो कर तो कुंवारी बेचारी ये बैठेगी ना!'

"सर, आप गलत सोच रहे हैं, सर!" मनमोहन मनमनिया।

"गलत हम नहीं सोच रहे हैं, आप सोच रहे हैं।" चतुर्वेदी ने दांत कुरेदना ख़त्म करते हुए कहा। 'टीवी देख कर आपका दमिग ख़राब हो गया है। अपनी स्टडीज़ पर ध्यान दीजिए। रही बात आज के इंसीदेंट की, तो कहिए तो फ़ोन करके एस.एच.ओ. को बुला दूँ? एफ़.आई.आर. दर्ज़ करा दीजिये। लेकिन इतना समझ लीजिए कि वे लड़के लोकल हैं। पंगा लेंगे तो आज उन्होंने सर्किफ़ पत्थर भर मार के वार्नगि दी है, कल आपके हॉस्टल के कमरे में घुसकर आपको ठोंक जायेंगे। मेरी सलाह यही है कि चुपचाप आप लोग अपने डिपार्टमेंट में लौट जाइये और आइंदा इस तरह साथ-साथ मत घूमिये।"

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

pocket. Get a car. Why risk walking around so openly with them? All the cars with their tinted windows I see driving from town onto campus, who knows what-all goes on inside? C'mon, there are hotels everywhere—why don't you try there? If you keep on like this, it'll be dangerous for the girls, not just for you. It's a bad atmosphere here. There'll be nonsense scrawled all over the walls on campus in no time. It's nothing to you, but what happens to the poor bachelorette whose name's been dragged through the mud and is left high and dry?"

"Sir, you are misunderstanding, sir."
Manmohan whimpered.

"I'm not misunderstanding. You are," Chaturvedi said, finishing with his teeth. "Your minds have gone bad from watching too much TV. Focus on your studies. And about today's little incident. What should I do, summon the deputy of police? By all means, go and press charges. But don't forget that these boys are locals. They only hit you on the head with a rock today as a warning. They were just messing with you. But tomorrow they'll break into your hostel and beat you senseless. This is my advice for you people: quietly return to your department, and in the future don't walk around together like that."

They left. The pain in Aabha's head was getting worse. Rahul felt the back of his head swelling up a bit.

So this was the postmodern age when Valentine's Day was celebrated in small towns and the demand for cake and Archie's greetings cards for New Year's Eve was on the rise, even in the roughest, most backward neighborhoods, thanks to ads on TV.

Watch the ascetic with the shorn head drink Pepsi and break-dance in front of the Ram temple, a pistol for a phallus. And look at his sacks, nearly bursting with dirty money from

वे लोग लौट आए। आभा के माथे का दर्द बढ़ रहा था। राहुल के सरि के पीछे भी छोटा-सा गूमड़ नकिल आया था।

तो यह वह उत्तर आधुनिक समय है जब छोटे-छोटे शहरों में वेलेंटाइन डे मनाया जा रहा है और न्यू इयर ईव के लिए भुच्च पछिड़े कस्बों में भी टीवी वज्जिआपनों की बदौलत केक और आर्चीज़ के कार्ड की बिक्री बढ़ गयी है।

देखो, एक चुटियाधारी वनमानुष पेप्सी पीता हुआ राम लला के मंदिर के सामने ब्रेक डांस कर रहा है और उसके लगि में देसी कट्टा बंधा हुआ है। और उसकी अंटी में दुबई के इब्राहीम भाई का हवाला रुपया है। उसे वोट दो, वह हटित्ववाद लाएगा।

राहुल के सरि का गूमड़ दर्द कर रहा था। कहीं कोई ब्लड क्लॉटिंग न हो गई हो? वह डर गया।

*

वह घटना राहुल के जीवन में उस दोपहर ढाई बजे के आसपास घटी, जो किसी के जीवन में पहली बार और शायद एक ही बार ज़रूर घटा करती है।

आकाश में हल्की बदलियाँ थीं। दो दिन पहले पानी बरसा था। कैपस के सारे पेड़ और सारी इमारतें धुलकर दोपहर की खली हुई धूप में चमक रही थीं।

अगस्त का रंग खूब गाढ़ा हरा होता है और उसकी तारीखों में घास की भीगी हुई हरी गंध भरी होती है। जब कोई अगस्त की सड़क पर चलता है, तो उसके जूते वनस्पतियों के कोंपलों और घास के फूलों और तनिकों में लथिड़ जाते हैं। भुने हुए भुट्टे खाने का मौसम।

उस पत्थर वाली घटना के बाद से राहुल और उसके दोस्त काफ़ी सतर्क हो गये थे। उस दिन, जसि दिन राहुल के जीवन में यह घटना घटी, वे लोग अपने वभिाग के कॉमनरूम में बैठे हुए थे। आभा, सीमा फ़लिपि, मनमोहन, राणा, अणमि, राजू, रेणु, नीरा दीदी और भगवत। भुट्टे खाये जा रहे थे और फ़िल्मी अंताक्षरी, क्रिकेट, टीवी सीरीयल और

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

Ibrahim, the famous Mafiso and resident of Dubai.
Vote for him—he'll bring on the Hindu Raj.

The swelling on Rahul's head began to throb. He feared he'd lost some blood.

VI

The event happened in Rahul's life sometime around 2:30 in the afternoon, the kind of event that happens for some only once in a lifetime.

There were a few clouds left in the sky since it had rained two days before. All of the rain-washed trees and buildings sparkled in the midday sun.

The color of August is a lush, deep green, and the days are filled with the earthy fragrance of wet grass. Going for a walk in August means having your shoes muddied with blades of grass or tender shoots. It's the season for eating roasted corn on the cob.

After the stone-throwing incident, Rahul and his friends were on alert. The day in Rahul's life when the event would happen, he was sitting with his friends in the department common room. Aabha, Seema Philip, Manmohan, Rana, Anima, Raju, Renu, Neera Didi, and Bhagvat. They were eating their corn on the cob and started playing Hindi film song games, arguing about cricket and TV serials, and wound up playing the table like a tabla and taking turns singing songs. They'd bolted the windows and doors from the inside to be sure no local would come in and cause trouble. It was two days until the holiday of rakshabandan, when sisters tie colorful threads of affection—the rakhi—around the wrists of their brothers. Talk was thick about which girls would, by dint of tying the rakhi around the wrist of a boy or a teacher, cancel the one-sided soap opera once and for all and recast the once aspiring lover

फ़िल्म पर बहस से शुरू हुआ दौर मेज़ को तबले की तरह बजाने और बारी-बारी से गाना गाने तक पहुंच गया था। खड़कियाँ और दरवाज़े अन्दर से बन्द कर लिए गये थे, जिससे कोई लोकल लफूट आकर पंगा न खड़ा कर दे। दो दिन बाद रक्षाबंधन का त्यौहार था। कौन लड़की किस टीचर या लड़के को राखी बांध कर धड़ल्ले से चलते एकतरफ़ा रोमेंटिक सोप ऑपेरा के बीच में अचानक एक कभी न ख़त्म होने वाला 'ब्रेक' डाल देगी, इसकी सूची बनाई जा रही थी। राजू और नीरा दीदी के पास ऐसी प्रामाणिक सूचनाओं का रोचक खज़ाना था।

'अग्रवाल सर आजकल लगातार कैप लगाकर युनिवर्सिटी आते हैं। एक बार तो बारिश में उनकी टोपी भीग कर लत बन गयी थी, उसमें से बेतहाशा पानी चू रहा था। तब भी उन्होंने टोपी नहीं उतारी। उन्हें लगता है उनकी गंजी खोपड़ी देखकर रीता सक्सेना उन्हें छोड़कर किसी और के साथ लग जाएगी।' नीरा दीदी ने बताया।

'अग्रवाल सर की गंजी खोपड़ी, उस पर बैठी तो फसिल जाएगी छोकरी।' राजू ने मेज़ को तबले की तरह बजा-बजाकर गाया।

'और वो हृदी वाले कर्वा जी, तिवारी सर। कहते हैं परसों उनको लाइब्रेरेयन ने सबके सामने डांटा कि आप यहाँ कतिबें देखने आते हैं या लड़कियों की जासूसी करने और उन्हें घूरने।'

'ही इज़ अ पीपर, वायॉरसिट! कहते हैं, वे लड़कियों के पैरेंट्स को फ़ोन से सूचना भी दिया करते हैं। एक बार उनकी पटिआई भी हुई थी।'

'पद्मश्री ले आया है साला। ही इस अ ग्रेट जुगाडू लीच। अभी लंदन गया था। वश्व हृदी सम्मेलन में।'

अण्मि ने उस दिन गहरे जामनी रंग की स्लीव लेस ब्लाउज़ और समुद्री नीले रंग की साड़ी पहन रखी थी। सलिक की साड़ी। उसका सांवला रंग जैसे उद्भासित होकर चमकने लगा था। फुंसियों वाले चपटे से चेहरे में बच्चों जैसी शरारती लेकिन नरिदोष आँखें थीं।

'...बचपन की मोहबबत को, दिल से न जुदा करना।'

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

as trusted brother. Raju and Neera Didi had in their possession a bona fide treasure-trove of juicy info.

Neera Didi began. "So Aggrawal Sir is always coming to campus these days wearing this *cap*. The other day when it started raining the cap got so soaked; the water went through it like an old rag. But still he wouldn't take it off. He didn't want Rita Saxena to see his bald head and go run off with someone else."

"If a girl sits on Aggrawal Sir's bald head, she'll slip and she'll fall and she might wind up dead," Raju rhymed along with his tabla-like drumming on the table.

"And then there's that Hindi poet guy, Tivari Sir. I heard the other day the librarian told him off in front of everyone. She asked, 'Do you come to the library to look at the books, or to spy on the girls?'"

"He's a peeper and a voyeurist! They say that he even calls the parents of girls to tell on them. He got beaten up for it once."

"The jerk even won the Padmashree. *He is a great leech.* He's in London now at the behest of the World Hindi Conference."

That day Amina was wearing a dark rose sleeveless blouse and a sea-blue silk sari. It went with her darker complexion and gave her some pizzazz. Her pimply, flat face had a mischievousness twinkle like a kid's, but her eyes were big and innocent. She sang:

Oh lover of my youth, please don't leave my heart

When you think of me, please pray we'll never part

and then

जब याद मेरी आये, मलिन की दुआ करना।

और

'...ये रश्मिता चार आँखों का, मेरे साजन न टूटेगा।

जो मुझको आजमाना हो, तो डोली ले के आ जाना।

सुन मेरे साजना... हो SI'

अणमि के गले में कोई उसास-सी बांसुरी थी, जिसक स्वर बाहर नहीं, भीतर की ओर दूर तक उतरते जाते थी। राजू की उंगलियाँ मेज़ को बजाते-बजाते कहीं खो जाती थीं। कौन-सा दुख होगा इस सांवली लड़की के भीतर, जो उसकी आवाज़ को इतना तम कर देता है?

आभा ने एक रैप सांग गाया, जो उसने खुद ही लिखा था। मजेदार था। राहुल ने हंसराज का पंजाबी पॉप गाया : 'सोणयि नी सोणयि नी सोणयि, मुखड़ा ना जा नी मोड़के, चल मेरे संग नाल सारा जग छोड़ के।' गाना ऐसा जमा कि साथ में राणा, नीरा दीदी, आभा, अणमि सबने स्वर मलाया।

'दलेर मेंहदी का हो जाये....' राजू ने मांग की। सबने साथ दिया।

ठीक इसी समय दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी।

खट...खट...खट!

तबला फरि से वापस काठ की गुंगी मेज़ में तब्दील हो गया और कमरे में चुपप्पी छा गयी। कौन होगा इस समय? सारे टीचर्स तो वाइस चांसलर के रेज़िडेंस की ओर गये थे और वहाँ से उन्हें पांच बजे शाम लौटना था।

कहीं कोई लफ़्ठों का गैंग तो नहीं आ गया? गाने की मस्ती में वे लोग भूल ही गये थे कि आवाज़ बाहर गलियारे तक भी जा रही होगी।

राहुल ने जाकर दरवाज़े की कुंडी खोली।

और, दरवाज़े पर वह थी। वह, जिसने राहुल ने अपने जीवन में पहली बार देखा।

दो बड़ी-बड़ी आश्चर्य से भरी आँखें। हँसी के तट तक पहुँचते-पहुँचते ठठिक कर रुक गये होंठ, पतली-सी छोटी नाक... जयपुरी बंधेज की गहरी हरी, पीले-लाल छोटों वाली चुन्नी। बासंती रंग का कुर्ता और सफ़ेद सलवार।

गोरेपन की ओर थोड़ा-सा झुका हुआ गेहूँ का रंग।

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

*Our love is perfect, lover, so strong it will
not break*

*he who puts me to the test should come
with rings and cake
listen, lover...*

Anima's windpipe was like a sorrowful flute
whose notes didn't project outward, but rather
inward, descending somewhere deep inside.
Raju's fingers were lost in his drumming. What
kind of sadness must there be inside of this dusky
girl that made her voice well up so?

Aabha sang a rap song she'd written
herself. It was a riot. Rahul pitched in with a
Panjabi pop song of Hansraj:

*soniye ni soniye ni soniye, mukhra na ja ni
morke chal mere sang nal sara jag chor kei*

The song was so catchy that soon Rana,
Nira Didi, Aaba, Anima and the rest joined in.

"How about some Daler Mendhi?" Raju
requested.

Just then someone knocked on the door.

The tabla once again turned into a mute,
wooden table as silence spread through the room.
At this hour? Who could it be? All of the teachers
were off at the Vice Chancellor's residence and
wouldn't be back until five in the evening.

Could it be some gang member? In their
singing reverie they'd forgotten that their voices
probably carried into the corridor.

Rahul went to the door and unlatched it.

And there she was, standing at the door.
She, whom Rahul saw for the first time in his
life.

Two big eyes brimming with surprise. On

'हाय अंजली'—सीमा फ़्लिपि और अणमि ने उसे
वश किया।

'क्या चल रहा था यहाँ? मैंने डिस्टर्ब तो नहीं
किया न?' अंजली ने पूछा। वह अणमि के पास वाली कुर्सी
पर बैठ गयी थी।

'नहीं यार, यहाँ तो हमारा डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू
टाएमपास म्यूज़िकल डॉट काम चल रहा था।' सीमा ने कहा।

'भुट्टा खाएगी? मेरे पास आधा बचा है,' रेणू ने
पेशकश की।

'पंडितानी है। तेरा जूठा भुट्टा खाएगी तो उसका
धरम भ्रष्ट हो जाएगा।' सीमा ने व्यंग्य किया।

अंजली भुट्टे के दाने छील-छील कर खाने लगी।
राहुल ने उसे देखा। कोई लड़की इतनी सुंदर, इतनी नरिदोष
और इतनी लाचार क्यों दखिती है?

उसे लगा अंजली के आने के साथ ही कमरे में जैसे
एक तरह की शांति और शीतलता आ गयी हो।

'चप्पा... चप्पा चरख चले... औनी बौनी बेरियों
तले...' राजू फरि मेज़ बजाने लगा था। लेकिन बहुत धीरे-धीरे
और उतनी ही धीमी आवाज़ में राणा गा रहा था। राहुल भी
बीच-बीच में शामिल हो जाता था।

पता चला अंजली स्टेट मनिस्टर जोशी की लड़की
है। पी.डब्ल्यू.डी. मनिस्टर। अल.के. जोशी। पूर्वज कभी
पहाड़ के रहे होंगे लेकिन कई पीढ़ियों से उनका परिवार यहीं
बस गया है। पहले जंगल के ठेकेदार थे फरि बलिडर बने।
लाखों-करोड़ों कमाए। इस बार पहली ही बार वधायक का
टिकिट मिला और जीत कर मंत्री बन गये। उनके पीछे
व्यापारियों, ठेकेदारों और प्रापरटी डीलर्स की पूरी ताकत
थी। अच्छन, बबलू, लखन पांडे जैसे अपराधियों के गरिह
की मदद भी उन्हें हासिल थी।

जोशी चाणक्य का बाप है। इलाके में यह आम
मान्यता थी। कुछ लोगों का कहना था कि राज्य की
राजनीति में वे बहुत ऊपर तक जाएंगे। ज्योतिषियों ने उनकी
हथेली पर साफ़-साफ़ राजयोग देखा था।

लेकिन अंजली?

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

the brink of laughter, her lips and cute little nose suddenly froze. She wore a Jaipuri tie-dyed green, yellow-and-red-spotted chunni. Her kurta was the yellow of spring flowers and her salwar was white.

She was very fair-skinned, with nod towards honey brown.

"Hi Anjali!" Seema Philip and Anima called out.

"What are you guys up to? I didn't disturb anything, did I?" Anjali asked, sitting down next to Anima.

"No, yaar, you just logged on to www.time-pass-musical.com," Seema said.

"Do you want some corn on the cob? I've got half of mine left," offered Renu.

"Heaven forbid! She's a strict Brahmin," Seema said in jest. "She'll become an outcaste if she eats that defiled piece of corn of yours."

Anjali began to munch on the corn. Rahul watched her. How could one girl look so beautiful, so innocent, so helpless?

Rahul felt as if a cool, peaceful breeze had entered the room with Anjali.

Chappa, chappa charkha chale, awni bawni bereyon tale...

Raju picked up the tempo on the table again. Then, in a halting, barely audible voice, Rana began singing, while Rahul joined in here and there.

It turned out that Anjali was the daughter of Joshi, a state minister. A.K. Joshi, Minister of the Public Works Department. The family must have come from the hills once upon a time, but

भुट्टे के दोनों को छील-छील कर लापरवाही से खाती हुई लड़की?

अंजली अणमि और सीमा फ़लिपि की सहेली थी। तीनों पहले एक ही गर्ल्स इंटर कॉलेज में पढ़ती थी। स्कूल के दिनों से साथ था। अणमि ने बताया कि अंजली हृदि में एम.ए. कर रही है।

हृदि में एम.ए. ?

राहुल चौंक गया। उसकी आँखों के सामने युनिवर्सिटी का हृदि वभाग घूम गया। मटैली, धुंधली बीमार लगती दीवारें। पान की पीक, गंदगी और धूल से भरे कोने। ऐसा लगता, जैसे विश्वविद्यालय का वह सबसे अलग-थलग हिस्सा किसी शापग्रस्त अंधेरे में डूबा हुआ है। आजीवन किसी एकल क़ैद की सज़ा भोगती एक रहस्यमय इमारत।

और वहाँ से निकलते, आते-जाते लोग। लगता ही नहीं था कि वे आज के समय के लोग हैं। कपड़े-जूते पहनने से लेकर, चलने-फरिने और बोल-चाल तक में वे सबसे भिन्न थे। कैपस में वे अक्सर झुंड में दिखाई देते। लड़कियाँ उन्हें देखकर घबरातीं। वे बहुत ऊँची आवाज़ में बातें करते और अक्सर ज़ोरों से चीखते हुए, खांसते हुए या ताली पीट-पीट कर हँसते। लगता जैसे यह कोई आदमि, सभ्यताओं के पार से आने वाला किसी होमोसेपियन की हँसी है। हा-हा, खी-खी, ही-ही। हूप...हूप...हूप।

वे एक साथ हास्यास्पद और डरवाने लगते। उन्हें देखकर एक ही पल दया और भय का संचार होता। वे किसी वचित्र भाषा में आपस में बात करते थे। यह किसी मृत सभ्यता की कोई प्रेत भाषा थी।

हृदि, उर्दू, और संस्कृत—ये तीन वभाग विश्वविद्यालय में ऐसे थे, जिनके होने के कारणों के बारे में किसी को ठीक-ठीक पता नहीं था। यहाँ पढ़ने वाले छात्र यहाँ से निकलकर किस भवष्य की ओर जाएंगे, कोई ठीक-ठीक नहीं जानता था। वे उजड़, पछिड़े, मसिफ़्टि, समय की सूचनाओं से कटे, दयनीय लड़के थे और वैसे ही कैरकिचर लगते उनके अध्यापक! कोई पान खाता हुआ लगातार थूकता

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

they'd been living here for generations. Joshi had started as a forest contractor, and then became a builder. He'd made millions. During this round of elections, his first time running for office, Joshi got on the ticket for the state legislature, won, and then finagled a ministerial appointment. Behind him was the full weight of the businessmen, contractors, and property dealers. He could also count on such criminal characters as Acchan, Bablu, and Lakhan Pandey.

Joshi was considered one better than Chanakya—the Machiavellian political sage—or so was the common belief in the area. People said that one day he'd go far in national politics. Astrologers saw clearly that it was in the stars.

And Anjali?

That girl munching merrily away on her corn on the cob?

Anjali was the girlfriend of Seema Philip and Anima. The three of them had gone to the same Inter-College for girls and had been inseparable. Anima said that Anjali was doing her M.A. in Hindi.

An M.A. in Hindi?

Rahul did a double take. An image of the Hindi department flashed before his eyes: the dull, gray, sick-looking walls, the red stains from paan juice spat out, garbage strewn in the corners, filth everywhere. It was as if the finest part of the university had been plunged into a terminal darkness. The mysterious building was serving a life sentence in solitary confinement.

And the people who came in and out of that department! They didn't look like they were living in today's world. From the clothes that they wore to the way they walked and talked, they were completely *other*. One would often see those guys together in a group around campus. Girls would see them and take fright. They spoke

रहता, कोई बेशर्मी से सार्वजनिक रूप से अपनी जांघ की जोड़ें खुजलाता, कोई चुटिया धारी धोती छाप रघुपतिया किसी लड़की को चपिँज़ी की तरह घूरता।

कैंपस में लड़के मज़ाक में उन वभिाग को 'कटपीस सेंटर' कहते थे। जो लड़कियाँ सूरत-शक्ल और प्रतभिा से ठीक-ठाक होतीं वे दूसरे वषियों में एडमीशन पाकर विश्वविद्यालय की मुख्यधारा में शामिल हो जाती थीं। बची-खुची लड़कियाँ और लड़के ही वहाँ प्रवेश लेते। उनको देख कर ही लगता था कि वे 'ड्रॉप आउट्स' हैं।

और अंजली जोशी उसी हृदि वभिाग में? कुछ दनिों में यह तो कहीं किसी मादा गोरल्लिा में कहीं बदल जाएगी? अपभ्रंश और पाला में बोलती हुई, हल्दी और बेसन के उबटन में सझी हुई कोई यक्षणी या गऊ का दूध पीती कोई जंगली ऋषि कन्या।

अणभिा से पता चला कि अंजली ग्रेजुएशन के दनिों में बहुत बीमार पड़ गयी थी। उसे पीलिया हो गया था। उसी हालत में परीक्षा दी। पेपर्स ख़राब हुए और बड़ी मुश्कलि से पास हो पाई। उसके पिताजी ने हृदि डेपार्टमेंट के हेड आचार्य एस.एन. मथिरा को कह कर अंजली का एडमीशन वहाँ करा दिया।

'कोई भी भाषा, जब तक कोई समुदाय उसे बोलता है, वलिप्त नहीं होती। योरेंप की भाषाओं के इतने प्रसार और प्रचार के बावजूद, शताब्दियों तक चलने वाले औपनिविशकि और साम्राज्यवादी पराधीनताओं के बावजूद, अफ़्रीका और एशिया की छोटी-छोटी आदवासी भाषाएँ तक मटिाई नहीं जा सकीं। वे आज भी ज़िदा हैं 'हो' जैसी आस्ट्रेकि परिवार की भाषा, जसि बहुत थोड़े-से आदवासी बोलते हैं, आज के समय के आदवासी हैं।

सो, दे आर द ट्राइबल्स! वे आज के समय के आदवासी हैं।

'नहीं, वे आदवासी नहीं, मुल्ला और पुरोहित हैं। याद रखो, आदवासी कभी रेट्रोग्रेसिव नहीं होता। वह जड़ नहीं होता।' कार्तिकिय ने बहस में कहा था।

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

in high-pitched voices, screeching loudly, clapping their hands, having a coughing fit, all the while laughing at their own jokes in a sound like that of primal man before the dawn of civilization. *Ha-ha, hee-hee, hoo-hoo.*

They were ridiculous and frightful all at the same time, and inspired both pity and fear. They spoke in a peculiar language among themselves—some spirit tongue of a dead culture.

Hindi, Urdu, and Sanskrit: nobody really knew for sure the *raison d'être* for these three departments. What kind of future would their graduates have? No one had a clue. Those boys were pitiful, misfits, backward, isolated from the real world, while their teachers fit the same kind of caricature. One would shamelessly scratch his crotch in public, while another shaved-headed dhoti-clad Ram-worshipper type would ogle some girl like a chimpanzee.

Students on campus jokingly referred to the department the as the “half-price house.” Girls who had brains and talent took admission in the other departments in the university mainstream. Only the leftovers took admission in the Hindi department. One look at them and you knew: *dropouts*.

Could this Anjali Joshi really be in that very same department of Hindi? What if she also turns into a mother gorilla next week? She'll look like some forest-dwelling rishi chick, speaking in middle Indo-Aryan or Pali, smeared with turmeric paste, drinking boiled cow or yak's milk.

Rahul heard from Anima that Anjali had been quite ill around the time of her graduation. She'd come down with jaundice, and took her exams in that condition. Her grades, understandably, were simply awful, and she barely passed. So her father had a word with S.N. Mishra, the head of the Hindi department, and secured her admission.

मैं भी गोरल्ला बनूँगा। एक होमोसेपिएन। एक पुरोहिता। मैं भी पान-गुटखा खाकर झुंड में घूमता हुआ हँसूँगा, खी-खी, हूप...हूप।

राहुल ने गलियारे से देखा। अणमिा और सीमा फ़लिपि के बीच में थी अंजली जोशी। वह जा रही थी। उसके दाहनि हाथ में एक छतरी थी। पीली छतरी।

यह नश्चिति ही वही पीठ है, जो उसके हॉस्टल के रूम में 252 की खड़की पर धूप को अंदर आने से रोक रही है। अगर अभी एक गुल्लक होता तो वह खबर को कान तक खींच कर एक बंदी मारता।

संगीत, कृतज्ञता और मीठी पीड़ा में डूबी एक 'उई' की आवाज़ अंजली जोशी के गले से निकलती, वह गर्दन मोड़कर उसकी ओर उत्सुक और आमंत्रित करती, चौकी हुई, आँखों से देखती।

और 'फ़्रीज़' हो जाती।

सचमुच, राहुल के जीवन में पहली बार कोई चलती-फरिती, जीती-जागती वास्तविक लड़की, एक स्थिर चित्र में उस दिन 'फ़्रीज़' हो गयी थी।

और उस लड़की का नाम था, अंजली जोशी।

eXchanges

Spring 2005

Beasts & Machines

Kinnu Da once said, "Take any language. As long as there is some group of people communicating with it, it won't vanish. In spite of the massive spread of European languages, centuries of colonialism and imperialist subjugation, the itchy-bitsy indigenous languages of Africa and Asia still haven't been eradicated. Living languages still exist today, like Ho, which is spoken by only a few adivasis."

So, they are the tribals! They are the adivasis of today.

"No, those aren't the adivasis," Kartikeya countered, "they're the Muslim mullahs and the Hindu purohits. Don't forget, an adivasi is never *retrogressive* and never dumb."

I'll become a gorilla too. A homo sapien. A purohit. I'll chew paan and gutkha, run around in a pack and laugh, *Ha-ha, hee-hee, hoo-hoo*.

Rahul watched from the corridor. In between Anima and Seema Philip was Anjali Joshi. She was about to leave. In her right hand she held a parasol. A yellow parasol.

That was definitely the very same back that deflected the sun's rays from Room 252. "If I had a slingshot," Rahul thought, "I'd pull the rubber all the way back and then let loose a shot."

A voice drenched in melody, gratitude, and sweet sorrow would moan "Oooooooh," and then she would turn around with those stunned, eager, inviting eyes.

And in that pose, she would be frozen.

In truth, that day was the first time in Rahul's life that a real, living, breathing, flesh-and-blood girl had been captured in a freeze-frame.

And that girl's name was Anjali Joshi.